"मंथन"

डॉ आशिस्कुमार सिन्हा
पूर्व प्राध्यापक, बंगला विभाग
सिदो कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय
दुमका

रात को मैंने एक सपना देखा।
सुन आप कहेगें, क्या देखा-बोलों ना।
तो हाँ, रात को मैंने एक सपना देखा कि कि,
एक देवदूत सामने खड़े है। पूछते हैं-
बेटा, आगामी जनम में क्या बनना पसन्द करोगे?
मैंने कहा, कुछ भी बना दें महाराज, परन्तु
इस बेतुका मानव-जीवन से दिल मर गया है,
मैंने कहा।
अनेकों जिन्दगी पूण्य-कर्म कर तुमने यह जीवन पाया,
अब उसी से तुम्हारा दिल मर गया है-
पुनः मनुष्य बनना नही चाहोगें?
देवदूत पूछते है।
आप कुछ भी कह ले महाराज-परन्तु मुझे पुनः मनुष्य बनने की चाह नही

© Manahsakshi Volume 2

पूर्ण उदासीनता से मै कहता हूँ।
यह क्यों?
देवदूत हँस कर पूँछते है।
मैने कहा, इस बोझिल दुनिया में दिल ही थक चुका है महाराज।
यहाँ हम प्यार चाहते है, पर प्यार करते नहीं-
अपनापन को मजबूरी मानते,
सदाचार से दूर भागते,
गले लगाने पर गले पे ही चोट करने उतर आते।
यहाँ अपना नब्ज दाब कर हम औरों के दर्द का दवा देने है।
इसलिए महारज, मुझे अब मनुष्य जनम की चाह नहीं,
निराश होकर मै कहता हूँ।
देवदूत बोले, औरों के संबंध में सबकुछ ठीक कहा है तुमने।
पर, क्या कभी तुमने अपना गलियारा भी झांका है?
यह आप क्या कह रहे है महाराज?
आश्चर्य-चकित मै पूँछ बैठा।
परन्तु उत्तर नही मिला।
वहाँ कोई नही था।

MANAHSAKSHI (Consciousness)
An official publication of Sarvasumana Association &
Subharati Niriksha Foundation

MANTHAN
(Deep pondering over something)

-- Dr. Ashish Kr. Sinha
Former Principal, Dept. Bengali
S.K.M University, Dumka.

I had a dream in the night.
Listen, now you will tell me, let me know what you saw.
So yes, I had a dream at night that is…that is,
One Angel is standing in front of me. Asking…
Son, in your next birth what would you wish to become?
I replied, make me anything Maharaj, but
My heart is dead by this absurd human life.
I replied.
You have got this life after performing good deeds in so many births
And now your heart is dead because of this life-
You don't wish to become a human again?
Angel asked him.
You say what ever you want Maharaj- but, I don't wish to become a human again-
With full of sadness and tears I'm saying this.
But, why?
Angel asked him laughingly.
I said my heart is tired with this difficult world Maharaj.
Here we wish for love, but we don't love-
Togetherness is treated as compulsion,
Runs away from good deeds,
When we hug, they try to hurt us in return.
Here we control our pulses (pain) and provide medicines for others pains.
Hence Maharaj, now I don't wish to become a human,
Being disappointed I'm telling you this.
Angel replied,
You said everything true about others.
But, have you ever peeped into your own corridor?
What are telling Maharaj? I asked him surprisingly?
But I didn't get an answer
No one was there.

(Translated by Reesha P)

© Manahsakshi Volume 2